स्त्री विमर्श : हिंदी साहित्य में महिलाओं का चित्रण

जानकी नामदेव देसाई शोधछात्र, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

Email –janaki.desai12@gmail.com

सारांश :

नारी विमर्श नारी के अस्तित्व ,अस्मिता ,आत्मसम्मान, आत्मनिर्भर का दूसरा रूप है। सिर्फ महिलाएँ नहीं पुरुषों ने भी नारी को और उससे जुड़ी समस्याओं को उपन्यास में प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यास साहित्य में नारी के प्रति सुधारनावादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। उपन्यासों के माध्यम से नारी शिक्षा को प्रधानता देते हुए , अनमेल विवाह, विधवा विवाह,दहेज प्रथा पर उपन्यास लिखिए हैं। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में नारी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है। नारी की विभिन्न समस्याओं को हमारे सामने गंभीरता पूर्वक प्रस्तुत किया है । प्रमचंद्रोंत्तर कालखंड में जैनेंद्र ने कल्याणी में आधुनिक नारी की कथा है । कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी पात्र सशक्त दिखाई पड़ते हैं। उनके नारी पात्र समयानुकूल अपने आपको परिवर्तित करते चलते हैं। बेचारी नारी आँचल में दूध और आँखो में आँसू लेकर जीवन जीती है। स्त्री की सारी आज़ादी उसके 'मनिपर्स' अर्थात् उसके आत्मनिर्भर होने में निर्भर होती है।नारी संबंधी जीवन-मूल्यों को गहरी मार्मिकता और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है।

बीज शब्द : नारी, विमर्श, साहित्य, अस्तित्व ,अस्मिता, संघर्ष ।

प्रस्तावना :

नारी विमर्श प्रगतिशील विचारधारा है।जो आज हमारे पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ है ।जो नारी के हर एक अंग को सबके सामने प्रकट करता है । नारी और स्त्री एक दूसरे के समानार्थकवाहक है। नारी विमर्श पितृसत्ता के हिंसक व्यवहार, प्रहार , दुर्व्यवहार करने वाली मानसिकता पर विचार करता है ।आज का नारी विमर्श समाज में नारी पर होने वाले अन्याय ,अत्याचार ,शोषण के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है । हिन्दी साहित्य में उभरने वाला नारी-विमर्श स्त्री की आजादी, स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता, अस्मिता, स्वचेतना, संघर्ष, विरोध तथा विद्रोह इन सभी विचारधाराओं को लेकर चलता है। नारी विमर्श व्यापक संकल्पना है ।

स्त्री विमर्श :

हिंदी शब्दकोश में नारी के लिए "गुण प्रधान स्त्री ,महिला"1 यह अर्थ बताइए और विमर्श का अर्थ संस्कृत हिंदी शब्दकोश में "विचार विनिमय ,सोच विचार ,परीक्षण,चर्चा"2 यह बताया है । किसी भी विषय पर गंभीरता से चिंतन मनन करना, सलाह मशवरा लेना याने विमर्श है। "नारी विमर्श स्त्री विमर्श को नारीवाद नाम से भी जाना जाता है"3 नारीवाद का आंदोलन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा ग्रेट ब्रिटेन से शुरू हुआ था। नारी का नारी का शोषण जितना आत्मनिर्भरता के अभाव में हुआ है ,उतना आत्मनिर्भर होने से समाज में दिखाई नहीं देता।आज भी समाज में नारियों को पुरुष की तुलना में बौद्धिक और शारीरिक रूप से कमजोर माना जाता है । आज नारी आंदोलन के कारण,संविधान के कारण समाज में नारी को सम्मानीय स्थान मिलता है ।

भारत में सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू ,सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि ने नारी संघर्ष में बड़ा योगदान दिया है । स्वामी विवेकानंद ,महात्मा गांधी, डॉक्टर आंबेडकर,महात्मा फुले ने भारत में नारी चिंतन को एक नई दृष्टि दी है। नारी विमर्श नारी के अस्तित्व ,अस्मिता ,आत्मसम्मान, आत्मनिर्भर का दूसरा रूप है।अर्जुन चव्हाण कहते है "स्त्री-विमर्श और कुछ नहीं अपनी 'अस्मिता' की पहचान, 'स्व' की चिंता, 'अस्तित्व बोध' और अधिकार को जतलाने और बतलाने का विचार चिंतन है। यह सदियों से स्थापित पुरुष मानसिकता का तर्पण है भावुक स्त्री का समर्पण नहीं।"4 जहाँ से नारी को अपने 'मैं' की चिंता का अहसास होने लगेगा, वहाँ से समझना चाहिए कि स्त्री-विमर्श की शुरुआत हुई है। आत्मसमर्पण के और पुरुष की एकाधिकारशाही के माहौल से नारी को बाहर लाने का श्रेय स्त्री-विमर्श को ही देना होगा ।

हिंदी साहित्य में महिलाओं का चित्रण :

हिंदी साहित्य में महिलाओं का चित्रण समझने के लिए सिर्फ लेखिकाओं की रचनाएँ देखना सही नहीं है। बल्कि नारी को मुख्य रूप से चित्रित करने वाले पुरुष एवं नारी द्वारा लिखित रचनाओं को समुचित रूप से परखना सही होगा। भारतेंदु काल से लेकर आज तक के रचनाकार, कवि, लेखक ,लेखिकाएँ आदि ने नारी को हिंदी साहित्य के अलग-अलग विधाओं में चित्रित किया है। हिंदी उपन्यास में भारतेंदु काल से लेकर आज तक उपन्यासों में कुछ महत्वपूर्ण नारी पात्रों को प्रस्तुत किया है । नारी का शोषण, अत्याचार ,समस्या, नारी मुक्ति ,नारी अस्मिता, नारी का अस्तित्व आदि महत्वपूर्ण बातों को व्यक्त

किया है। सिर्फ महिलाएँ नहीं पुरुषों ने भी नारी को और उससे जुड़ी समस्याओं को उपन्यास में प्रस्तुत किया है। आज भी आबादी मिलने के बावजूद नारी को समाज में उसके बराबरी का हक ,अधिकार, अस्तित्व और अस्मिता की माँग सम्मान को ध्यान से सुना नहीं जाता।

प्रेमचंद पूर्व उपन्यास साहित्य में नारी के प्रति सुधारनावादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। किशोरी लाल गोस्वामी, लाला श्रीनिवास ,पंडित बालकृष्ण भट्ट आदि लेखक ने अपने परीक्षा गुरु, भाग्यवती, सौ अजान एक सुजान ,आधा खिला फूल उपन्यासों के माध्यम से नारी शिक्षा को प्रधानता देते हुए , अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज प्रथा पर उपन्यास लिखिए हैं। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में नारी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है। सेवासदन, प्रेमआश्रम निर्मला, गबन ,कर्मभूमि ,गोदान उपन्यासों में नारी की विभिन्न समस्याओं को हमारे सामने गंभीरता पूर्वक प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में नारी की चिंता, संघर्ष और प्रेरणा विद्यमान दिखाई देती है।

प्रमचंद्रोंत्तर कालखंड में यशपाल ,नागार्जुन, जैनेंद्र आदि प्रमुख थे ।जैनेंद्र ने परख ,सुनीता, त्यागपत्र ,कल्याणी, सुखदा उपन्यास लिखे। कल्याणी में अतृप्त और आधुनिक नारी की कथा है। सुखदा में कुंठाग्रस्त नारी का उल्लेख है। जैनेंद्र जी ने अपने उपन्यासों में आधुनिक समाज में नारी की स्थिति का पूर्ण रूप प्रस्तुत किया है।यशपाल ने मनुष्य के रूप में पुरुष प्रधान व्यवस्था में नारी मात्र भोग की वस्तु होने की नियति को प्रस्तुत किया है। झूठा सच में भी उन्होंने स्त्री की विवशता की कहानी बड़े सशक्त रूप में प्रस्तुत की। नागार्जुन ने 'रतीनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नयी पौध'आदि उपन्यासों में जीवितमृत होने की पीड़ा भुगतती विधवाओं, अशक्त बूढ़ों के साथ विवाह-बन्धन में बांध दी जाने वाली आठ-आठ, दस-दस वर्ष की बालिकाओं और कौलीन्य के नाम पर किसी भी उम्र के पुरुष के साथ ब्याह दी जाने वाली दर्जनों कन्याओं की नियति का अंकन किया।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी पात्र सशक्त दिखाई पड़ते हैं। उनके नारी पात्र समयानुकूल अपने आपको परिवर्तित करते चलते हैं। 'डार से बिछुड़ी' में केंद्र स्त्री पात्र के शोषण का वर्णन है। 'मित्रोमरजानी' की नायिका परंपरागत रूढि-बंधनों में अपने आपको बांधकर रखना नहीं चाहती है। यह पात्र अपनी कामेच्छाओं को खुलकर प्रकट करती हैं। चित्रा मुद्गल के 'एक जमीन अपनी' और 'आवां' स्त्री विमर्श के संदर्भ में चर्चित उपन्यास हैं।'आवां' चित्रा मुद्गल के स्त्री विमर्श का सार्थक उपन्यास माना जाता है। नमिता नामक जवान लड़की की जिन्दगी पर आधारित यह उपन्यास उसकी जिन्दगी में बचपन से लेकर होने वाले बलात्कारों का वर्णन करता है। अंत में नमिता एक स्वावलंबी स्त्री के रूप में परिवर्तित हो जाती है। जो कि आधुनिक समाज में पुरुषों के लिए चुनौती खड़ी करती है।

अर्जुन चव्हाण ने अपने विमर्श के विविध आयाम मे बताया है कि ,मुझे चाँद चाहिए की वर्षा वशिष्ठ इसी विचार की कायल है। विवाह करने की अपने भाई द्वारा दी गई सलाह वह इसलिए ठुकराती है कि उसे अपने पाँव पर खड़े रहना है। आर्थिक दृष्टि से स्वयं पूर्ण बनना है। अपात्र जीवन साथी को ढोना उसे अमान्य है। अतः अपने भाई को वह सुनाती है- "आयु के जिस मोड़ पर मैं खड़ी हूँ, उसमें शादी मुझे उतने महत्त्व की नहीं लगती, जितना अपने पाँवों पर खड़ा होना लगता है। ... कुपात्र के साथ बँधने से अकेले रहना अच्छा है।"5 वर्षा के इस कथन से नारी-विमर्श का केंद्रीय भाव अभिव्यक्त है।'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा ने अपने जीवन में कला को अंतिम ध्येय माना है। फलतः उसके जीवन में विवाह का कोई महत्त्व नहीं दिखाई देता।

आज वर्तमान काल में नारी विमर्श से प्रभावित नारी को 'होम साइंस' से ज्यादा कराटे सीखने की ज्यादा आवश्यकता है। मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' की असीमा अपनी सहेली स्मिता को जब 'होम साइंस' विषय को पढ़ते देखती है , तो उसे समझाती है कि आज के युग में 'होम साइंस' से ज्यादा कराटे सीखना अधिक जरूरी है। वह केवल अपनी सहेली को समझाती नहीं है बल्कि अपनी नौकरी के आरंभिक चार महीने के अपने वेतन को कराटे सीखने में खर्च कर देती है। -"बेवकूफ है, मुझे देख, मैंने अपनी नौकरी के पहले चार महीनों की तनख्वाह कराटे सीखने में खर्च की है। मर्दों की दुनिया में रहने के लिए साइंस नहीं, कराटे की जरूरत है।"6 असीमा का कथन स्त्री-विमर्श को स्पष्ट करता है। वर्तमानकालीन युग के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए सावधान करता है।

हिंदी साहित्य में अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, दिनकर, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता आदि कवियों ने नारी विमर्श संबंधी रचनाएँ लिखी है। मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' की उर्मिला और 'यशोधरा' की यशोधरा के माध्यम से नारी जीवन की व्यथा स्पष्ट की है। पति को हर हालत में पत्नी पर विश्वास रखना चाहिए। कारण नारी संसारूपी रथ का दूसरा पहिया है। फिर भी पुरुष नारी अवहेलना, उपेक्षा करता है। बेचारी नारी आँचल में दूध और आँखो में आँसू लेकर जीवन जीती है। जयशंकर प्रसाद ने नारी पात्रों को

प्राधान्य देकर 'कामायनी' महाकाव्य की रचना की है और प्रतिकात्मकता के माध्यम से नारी के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। प्रसाद जी ने श्रद्धा को हृदय का इडा को बुद्धि का और मनु को मन का प्रतीक माना है। सुमित्रानंदन पंत जी ने नारी की व्यथा को चित्रित करते हुए नारी स्वातंत्र्य का समर्थन किया है।

नारी कहानीकारों ने आज के टूटते परिवेश में जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी संबंधी जीवन-मूल्यों को गहरी मार्मिकता और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। जिनमें उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, अनीता औलक, सुधा अरोड़ा, विनीता पल्लवी आदि मुख्य हैं। उनकी कहानियों में नारी जीवन की अनेक विडम्बनाएँ, आशाएँ, निराशाएँ, भग्नता, विषमता, कटुता आदि का अंकन गहराई के साथ दिखाई देता है। सुभद्राकुमारी चौहान ने भी अपनी कहानियों में नारी की विवशता, व्यथा आदि पर उन्होंने कहानी लिखीं। जया जादवानी की कहानी 'पलाश के फूल' कहानी की नायिका अपूर्वा भी स्त्री मुक्ति की कामना करती है। कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास के अलावा आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी स्त्री विमर्श दिखाई देता है।

निष्कर्ष :

आज का नारी विमर्श का दृष्टिकोण नारी के मुख्यतः स्वतन्त्र व्यक्तित्व और स्वतन्त्र जीवन जीने की कामना का प्रतिरूप है। नारी-विमर्श पुरुषों के विरोध में संघर्ष न होकर जैविक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तरों पर नारी को जो कनिष्ठ स्थान दिया जाता है उसे नष्ट कर पुरुषों के समान स्थान प्राप्त करके अपने अस्तित्व की अलग पहचान निर्मित करता है। नारी को मानव-रूप में स्थापित करने का आग्रह नारी-विमर्श के मूल स्वरूप में निहित है।

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के ज़रिए महिलाओं का चित्रण बहुत ही अच्छा किया है है।इस चित्रण में महिलाओं की समस्याओं, उनके संघर्षों, और उनके आत्मविश्वास दिखाई देता है। महादेवी वर्मा ने स्त्री विमर्श से जुड़े प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, और शिवानी जैसी लेखिकाओं ने स्त्री मन की अंतर्द्वंद्वों को उकेरा है।स्त्री विमर्श में महिलाओं की समस्याओं, उनके संघर्षों, और उनके आत्मविश्वास को दिखाया गया है ।स्त्री विमर्श को हिंदी साहित्य के अलग अलग विधाओं में महिलाओं के जीवन की अनेक बातों को ईमानदारी से चित्रित किया गया है। महिलाओं के बदलते परिवेश में उनकी बदलती चेतना को दिखाया गया है। उपन्यास कविता, कहानी, नाटक अलग अलग विधाओं में महिलाओं के मन की ग्रंथियों को खोला गया है। स्त्री विमर्श में महिलाओं को केन्द्र में रखकर उनकी जागृति और अधिकार का महत्व बताया जाता है। स्त्रियाँ जो पहले से पीड़ित और शोषित थी, वे अपने आपको स्त्री विमर्श के जरिए व्यक्त कर रही है। समाज को सच्चाई से अवगत करा रही है ।

संदर्भ सूची :

1. डॉ. राजपाल हरदेव बाहरी, हिंदी शब्द कोश, राजपाल एंड संस, दिल्ली, संस्करण 2012 पृ.751
2. आपटे वामन शिवराम, संस्कृत हिंदी कोश मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकर्स, दिल्ली प्रथम द्वितीय संस्करण 2012 पृ.946
3. कृष्णदत्त पालीवाल, नारी विमर्श की भारतीय परंपरा, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014 पृ.5
4. डॉ. चव्हाण अर्जुन, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008 पृ.29
5. वही पृ.32
6. वही पृ.34